सीनियर सदस्य हैं जो लम्बे-लम्बे वक्तव्य यहां स्पेशल मेंशन में पढ़े जाते है।

श्री चतुरानन मिश्र: आप तो पहले ही कह रहे हैं। पहले कहिएगा या बाद में। आप बाद में कह देते।

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल): मैं आपको नहीं कह रहा हूं मैं केवल अपनी जानकारी के लिए पूछ रहा हूं। ऐसा कोई सिस्टम नहीं हो सकता कि इसमें जो समय लगता है वह सब्जेक्ट इंट्रोड्यूज कर दें, उसकी कापी यहां दे दें। वह रिकार्ड का पार्ट हो जाये। कोई ऐसा सिस्टम नहीं हो सकता। आगे के लिए पूछ रहा हूं अभी आपके लिए नहीं कह रहा हूं मैं।

श्री हेच० हनुमनतप्पा: आप डिसिप्लिन करना चाहते हैं वह ठीक है। यह डिसिप्लिन हर आइटम पर होना चाहिए। वह डिसिप्लन हम खो बैठे हैं...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल): वह आप सुबह बात कीजिएगा मिश्रा जी को बोलने दीजिए।

Pollution in Amjhore Rohtas District, Bihar, due to effluent discharge by P.P.C.L. Project

श्री चतुरानन मिश्र (बिहार): वह बात ठीक है। दो मिनट में आमतौर पर लोगों को खत्म करना चाहिए और अगर नहीं करते हैं तो बिजिनेस एडवाइजरी कमेटी में इस पर विचार करके एसोसिएट करने के लिए रिटर्न की बात कर लीजिए।

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल): वह हो जाये तो अच्छा रहेगा।

श्री चतुरानन मिश्र: मैं इस विशेष उल्लेख के जरिये आपका ध्यान बिहार के रोहतास जिले में अमझोर नाम की जगह में एक गंधक के कारखाने की ओर आकर्षित करना चाहता हूं जो भारत सरकार का है — पी०पी०सी०एल०। उस कारखाने से दूषित पानी निकलता है जिससे 12 गांवों के लोग तबाह हो गये हैं। कुछ गांवों के नाम हैं - नाबादी, खेलाबाद, करमा, कोठी बगहा, मेहरान और अन्य दूसरे गांव। यह पानी इतना दूषित है कि पूरी जमीन ऊसर हो गयी है। जो मवेशी पी लेते हैं उस पानी को या तो मर जाते हैं या अगर उनके पेट में बच्चा रहता है तो गर्भपात हो जाता है। किसान बहुत ज्यादा तबाह है। यह सरकारकृत विपत्ति है। इसीलिए आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करता हूं कि अविलम्ब हस्तेक्षप करके उन किसानों के दुख को दूर करे। धन्यवाद। देखिए, हमने ज्यादा टाइम नहीं लिया।

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल): मैं आपको इसमें नहीं कह रहा था। केवल एक बात मेरे दिमाग में आ रही थी कि जब पढ़ना ही है तो रिकार्ड का पार्ट बना देते हैं और वह विषय इंट्रोड्यूस कर दें तो रेडियो और टी०वी० पर जो आना है वह आ जायेगा और अगर प्रेस को देना है तो रिलीज कर सकते हैं। It will save time so that we can devote more time to real debate.

श्री चतुरानन मिश्र: सुझाव अच्छा है आपका। इसको बैठकर तय करेंगे।

उपसभाध्यक्ष: ठीक है। संघ प्रिय गौतम।

Representation of S.C./ST Officers in I.A.S. from State Civil Services in Uttar Pradesh

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, देश के अनेकों राज्यों में गरिमामय पदों की नियुक्तियों और प्रोन्नतियों में पी०सी०एस० और आई०ए०एस० अधिकारियों में प्रायः एक विवाद चला रहता है। हमारे उत्तर प्रदेश में प्रोन्नतियों में 33 प्रतिशत पद तो भरे जाते हैं पी०सी०एस० अधिकारियों से और सीधी भर्ती से जो आई०ए०एस० आते हैं, 67 प्रतिशत उनसे भरे जाते हैं। प्रायः पी०सी०एस० अधिकारियों की शिकायत रही है कि प्रोन्नतियों में और गरिमामय पदों की नियुक्तियों में पी०सी०एस० अधिकारियों के साथ भेदभाव बरता जा रहा है। आये दिन अखबारों में पढ़ने, सुनने और देखने को भी मिलता है। लेकिन कोढ़ में खाज वाली कहावत यह है कि उत्तर प्रदेश में इस तरह से प्रोन्नतियों से भरे जाने वाले पद जो पी०सी०एस० या राज्य की अन्य सेवाओं से भरे जाते हैं, वे 123 चिन्हित पद हैं। पर बड़े ही दुख की बात यह है कि इनमें से एक भी पद आज तक किसी भी अनुसूचित जाति और जनजाति के अधिकारियों से नहीं भरा गया है। मान्यवर, उत्तर प्रदेश में प्रायः अब तक जितनी सरकारें बनी हैं वे अपने को समाजवादी सरकारें कहती हैं और इन वर्गों का हितैषी कहती है लेकिन दुख की बात यह है कि आज तक 123 पदों में से एक भी पद अनुसूचित जाति के पी०सी०एस० या राज्य की अन्य सेवाओं के अधिकारियों से नहीं भरा गया है।

आपके द्वारा मैं भारत सरकार के कार्मिक विभाग के मंत्री और विभाग से यह मांग करता हूं और वहां उत्तर प्रदेश की सरकार से मांग करता हूं कि जब कभी भी नाम भेजे जायें उनमें कम से कम आरक्षण का ध्यान रखते हुए दो, तीन या चार नामों में एक नाम राज्य सरकार के अधिकारी या पी०सी०एस० के अनुसूचित जाति या जनजाति के अधिकारी का अवश्य भेजा जाये और प्रोन्नति करते समय इन वर्गों के अधिकारियों को भी महत्वपूर्ण पदों पर भेजा जाये।

उपसभाध्यक्षः श्री हनुमनतप्पा। आपने अभी मुझे एक सुझाव दिया था और मेरे सुझाव को अनुमोदित किया था। कृपया उसका ध्यान रखें।

Development of Chitradurga as Tourist Centre

श्री एच० हनुमंतप्पा (कर्नाटक):* उपसभाध्यक्ष महोदय,

कर्नाटक का चित्रदुर्ग एक ऐतिहासिक जिला होने के साथ साथ एक ऐतिहासिक नगर भी है विजयनगर साम्राज्य के शासकों के समय के आसपास चित्रदुर्ग के एक राज्य परिवार ने चित्रदुर्ग में अपना ही एक साम्राज्य का संस्थापन कर के विरोधी राजा तथा अन्य छोटे राजाओं को हराकर स्वतंत्र रूप में दो शताब्दियों तक शासन किया था।

उस जमाने के शासन की सुविधा के अनुसार किलों बड़ी दिवारों, महलों सुरंग मार्गों आदि का उसी समय अधिक वैज्ञानिक ढंग से निर्माण किया था और आज भी इनके भवनावशेष मूक साक्षियों के रूप में खड़े हुए हैं। एक जमाने में यह क्षेत्र एक शक्तिशाली राज्य के रूप में प्रसिद्ध था। अपनी रक्षा सामग्री और रक्षा व्यवस्था के कारण यह एक अभेध किला बना हुआ था। एक तरफ तो मैसूर संस्थान का विजय नगर साम्राज्य शिरा संस्थान आदि चित्रदुर्ग राज्य से ईर्श्या कर रहे थे, दूसरी तरफ पेशवा तथा बहमनी सुल्तानों की नजरों में भी था। फिर भी इस दुर्ग को कोई हरा नहीं सका। इतना ही नहीं, उसने उस जमाने के शूरवीर और साहसी हैदरअली के साथ युद्ध करके जीत हासिल की थी। इसके पश्चात् के हमलों में षड्यन्त्र के कारण टीपू सुल्तान से हार स्वीकार करनी पड़ी। जो भी हो इसने दो शताब्दियों तक अभेध दुर्ग के रूप में अपनी रक्षा सामग्री और रक्षा व्यवस्था की सहायता से अपनी सेना को प्रबल बनाए रखा। उस समय में निर्माण किये हुए गुप्त मार्ग, सुरंग मार्ग, किले, तोपें तथा गोला बारूद आज भी कौतूहलजनक है।

इसी प्रकार एक गुप्त मार्ग में घुसे हुए शत्रुओं को एक सामान्य दुन्दुभी-वादक की पत्नी ओबव्व ने अपनी मूसल शत्रुओं के सिर पर मारकर अपनी राजभक्ति प्रदर्शित की थी। आज भी एक ऐतिहासिक नारी के रूप में उसका नाम प्रसिद्ध है। आजकल ओबव्व के नाम पर एक स्टेडियम और एक महिला सहकारी बैंक का निर्माण भी हुआ है। देश के कई छोटे मोटे पर्यटन केन्द्रों की पहचान करके सरकार लाखों रुपये उनपर खर्च कर रही है, मगर बहुत सालों से चित्रदुर्ग को पहचान करके उसे पर्यटक सुविधाएं देने के लिए तथा पर्यटन केन्द्रों की सूची में लाने के लिये हम अनुरोध करते आ रहे हैं।

जब माननीय श्री माधवराव सिंधिया जी पर्यटन मंत्री थे तब उन्होंने एक मोटल के निर्माण के लिये बीस लाख जारी किये थे। अफसोस की बात है कि अब तक मोटेल भी नहीं बना और उसके बारे में कोई व्यौरा भी उपलब्ध नहीं है।

सबसे बड़े दुख की बात यह है कि पुरातत्व विभाग के अधिकारियों ने इस ऐतिहासिक किले की रक्षा के लिये कोई भी योजना नहीं बनाई और मूक प्रेक्षकों की तरह भवनाशेषों को देख रहे हैं। पहले भी मैंने इसी विषय को इस सदन में सरकार का ध्यान में लाया था। मैं अपनी ओर से और सदन की ओर से यह मांग करना चाहता हूं कि चित्रदुर्ग को एक ऐतिहासिक केन्द्र के रूप में पहचान करके उसे प्रर्यटन केन्द्र की आवश्यक सुविधायें प्रदान की जायें।

प्रो० आई० जी० म्नदी (कर्णाटक): सर, मैं अपने आपको इससे समबद्ध करता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN: (SHRI SATISH AGARWAL): I understand there is a supplementary list of business under which a statement by the Minister of State for External Affairs, Mr. R.L. Bhatia, is going to be made on a demand, probably, from Mr. I.K. Gujral, regarding the death of some Indians in the Gulf and evacuation of Indians from Yemen and Rwanda. So, looking at this and also because there are four Bills still to be considered by the House, do I have permission to adjourn the House till 2.30 P.M.?

*मूल कन्नड़ का हिन्दी अनुवाद।